औषधीय पौधों की उपयोगिता

डॉ. कमल किशोर एवं डॉण् प्रज्ञा जोशी

असिस्टेंट प्रोफेसरए खालसा कॉलेज ऑफ़ वेटरनरी एंड एनिमल साइंसेजए अमृतसर

भारत मंे वानस्पतिक औषधियॉं अत्याधिक प्रचलित और लोकप्रिय हैं। हमारे पूर्वजों एवं ऋषियों ने मनुष्यों एवं पशुओं को रोगरहित करने एवं विभिन्न घातक व्याधियों से मुक्ति हेतु वानस्पतिक औषधियों को आयुर्वेद चिकित्सा पद्धति के माध्यम से उपलब्ध करवाया। जड़ी बूटियों की चिकित्सा पद्धति के बिषय में अनेक संहिताओं में अनेक विद्वानों ने लिखा है पर चरक संहिता आयुर्वेद का सबसे प्राचीनतम एवं विस्तृत ग्रंथ है।

भारत मंे वानस्पतिक औषधियॉं अत्याधिक प्रचलित और लोकप्रिय हैं। हमारे पूर्वजों एवं ऋषियों ने मनुष्यों एवं प्राचीन काल में मानव अपनी बीमारी का इलाज वानस्पतिक औषधियों द्वारा करता था, लेकिन आज के आधुनिक युग में विलुप्त हो रहे जंगलों के कारण वनौषधियों की खेती की आवश्यकता पड़ने लगी है। आज औषधीय पौधों की खेती के अन्तर्गत उन सभी जड़ी बूटियों की खेती सम्मिलित की गई है जिनका उपयोग विभिन्न प्रकार की आयुर्वेद, एलौपेथिक तथा यूनानी एवं अन्य औषधिया बनाने में प्रयुक्त होता है।औषधीय पौधों की खेती करना आर्थिक रूप से लाभकारी एवं मानव हित के लिए भी परम आवश्यक है। औषधीय पौधों की व्यवस्था सुनिश्चित करना अत्यावष्यक है।
सफलतापूर्वक खेती के लिए सम्पूर्ण ज्ञान एवं व्यावहारिक प्रशिक्षण जरूरी हो जाता है। औषधीय पौधों की पहचान, क्षेत्र की जलवायु, बाजार की मांग तथा उपलब्ध संसाधन का मिश्रित समावेश ही इसे सफल बनाता है।

औषधीय फसल के शतावरी (एस्पेरागस रेसीमोसस)

शतावरी की लताओं मंे बारीक सुईयों की समान पत्तियां एवं मटर के दाने के समान फल लगते हैं एवं जड़े मूली जैसी होती हैं । शतावर की कंदिल जड़े मधुर एवं रक युक्त होती हैं । इसकी जड़ों में शतावरिन 1 व शतावरिन 4 रसायन पाया जाता है।

शतावर का उपयोग: शतावर मेघाकारक, जठराग्निवर्धक, पुष्टिदायक होता है। शतावर दूध बढ़ाने वाला है। इसकी जड़ों में एंटीबायोटिक तत्व होने से यह क्षय रोग में उपयोगी सिद्ध हुआ है। शतावर का उपयोग बलवर्धक टानिक, महिलाओं के लिए टॉनिक, ल्यूकोरिया तथा अनीमिया की दवाईयां बनाने में उपयोग होता है। शतावर भूख न लगने व पाचनशक्ति बढ़ाने हेतु टानिक बनाने के काम में आता है। शतावर मानसिक तनाव से मुक्ति दिलाने वाली दवाईयों में भी उपयोगी है ।

Source: www.1mg.com

नीम (एजैडीरक्टा इंडिका)

नीम का अर्थ है "बीमारी से छुटकारा"। नीम एक चमत्कारी गुण वाला पौराणिक एवं मंगलकारी वृक्ष है, जिसका उपयोग औषधी (यूनानी आयुर्वेदिक एवं सिद्ध), उर्वरक, कीटनाशक, कीट प्रतिकारक बनाने में किया जा रहा है। नीम का प्रत्येक भाग जड़, छाल, तना, पत्ती एवं बीच सभी उपयोगी हैं। नीम वृक्ष पर्यावरण संतुलन, जैव उर्वरक एवं जैव कीटनाशकों के रूप में महत्वपूर्ण है। साधारण नीम के साथ ही अन्य प्रजातियाँ जैसे- मीठा नीम/करी पौधा आकाश नीम, बकाइन एवं महानीम भी उपलब्ध हैं। निम्बोली में उपयोगी रसायन जैसे अजाडिरेक्टिन, मेलेयन्टियाल एवं सैलेनिंग और निम्बीडीन पाये जाते है ।

नीम का उपयोग: नीम के बीजों में "निम्बिडिन" रसायन का उपयोग विभिन्न औषधियों में मलहम, टूथपेस्ट, साबुन, कान्तिवर्धक औषधि, लोशन, शैम्पू, क्रीम, सिर के बालों के टानिक, कफनाशक दवाएं, बनाने में उपयोग होता है। अनाज व दालों के भण्डारण में कीटों की रोकथाम के लिए नीम की सूखी पत्तियों, बीज का चूर्ण और नीम का तेल मिलाकर भण्डारण करते है। नीम की पत्तियों से घोल बनाकर फसलों पर छिड़काव करने से कीटों की रोकथाम की जा सकती है।

नीम के अर्क/सक्रिय तत्व से बना साबुन चर्म रोगों में उपयोगी है। नीम की खली का उपयोग विभिनन फसलों में खाद के रूप में उपयोग किया जाता है।

नीम की नई कोपलें सुबह पानी से खाने से रोगरोधी क्षमता बढ़ती हैं एवं पेट के कीड़े मरते हैं एवं खून साफ होकर चर्म रोग दूर होते हैं। नीम का गोंद, औषधी रूप में शक्तिवर्धक, शान्ती प्रदान करने वाला एवं मानसिक रोगों में प्रयुक्त होता है। नीम का पेड़ भूमि की उर्वरक क्षमता एवं जलधारण क्षमता को बढ़ाने की क्षमता रखते हैं। नीम की लकड़ी कवक रोधी, कीटरोधी होने से फर्नीचर एवं कृषि औजार बनाने के लिये उपयोगी है। नीम के तेल से कई औषधी निबोला, क्योरानीन मलहम, नेमलेण्ड मलहम, सेन्सोल, नीम फ्लोर आदि बनाई जाती हैं। नीम की छाल से निकलने वाली गोंद का उपयोग शक्तिवर्धन दवाईयां बनाने तथा इसका उपयोग ज्वर, उल्टी होना, चर्म रोगों में प्रयुक्त औषधी में किया जाता है।

किसानो के लिए सन्देश : शतावरी में लैक्टोजेनिक गुण हैं जिसके चलते यह डेयरी पशुओं में दुग्ध उत्पादन को बढाने एवं पशुपालको की अर्थव्यवस्था में सुधार लाने ने मदद कर सकता है। नीम पारंपरिक रूप से विभिन्न पशुधन कीड़ों जैसे कि मैगॉट्स, हॉर्नफ्लाइज़, ब्लो-फ्लाइज़ आदि के खिलाफ इस्तेमाल किया जाता रहा है। नीम पशुओ में जीवाणुओं को नियंत्रित करने और आंतों के कीडों के खिलाफ भी उपयोगी है। नीम का तेल विभिन्न स्थितियों से राहत प्रदान कर सकता है और कुत्तों के त्वचा उपचार के लिए भी इसका इस्तेमाल किया जा सकता है।